पहल

अपनी भाषा-संस्कृति के लिए पहला स्वदेशी एआइ सिस्टम

आइआइटी बॉम्बे बनाएगा देसी एआइ मॉडल 'भारतजेन'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मुंबई. आज दुनिया के एआइ मॉडल मुख्यतः अंग्रेजी और पश्चिमी दुनिया के डेटा पर प्रशिक्षित हैं। ऐसे में भारतीय भाषाओं, बोली-बानियों और सामाजिक व्यवहार को समझने वाले एआइ की कमी महसूस होती है। इस अंतराल को भरने के लिए देश के सबसे नवाचारी स्टार्टअप्स की जन्मभूमि कहे जाने वाले आइआइटी बॉम्बे ने अब खुद 'भारतजेन टेक्नोलॉजी फाउंडेशन' नाम से अपनी एआइ कंपनी स्थापित की है इसका उद्देश्य सिर्फ लार्ज लैंग्वेज मॉडल (एलएलएम) बनाना नहीं, बल्कि ऐसे मॉडल तैयार करना है जो भारत की विविध संस्कृति व भाषा की बारीकियां उसी संवेदनशीलता से पकड़ सकें जैसे कोई भारतीय उपयोगकर्ता सोचता, बोलता या लिखता है। कंपनी शुरुआती संस्करणों को ओपन सोर्स भी करेगी, जिससे स्टार्टअप्स, एंटरप्राइजेस और डेवलपर्स इन मॉडलों को जरूरतों के मुताबिक उपयोग कर पाएंगे।

नया मॉडल भारतीय वास्तविकताओं को आधार मानकर विकसित किया जाएगा यानी डेटा, भाषा व सांस्कृतिक समझ सब अपना।

व्यापक पैमाने की तकनीकी साझेदारी

यह परियोजना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के नेशनल मिशन ऑन इंटरडिसिप्लिनरी साइबर-फिजिकल सिस्टम्स (एनएम-आइसीपीएस) के तहत विकसित हो रही है। मंत्रालय ने प्रारंभिक चरण के लिए 235 करोड़ रुपए की फंडिंग दी है, जो भारत के सार्वजनिक एआइ इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए बुनियादी निवेश माना जा रहा है। आइआइटी बॉम्बे मिशन का नेतृत्व कर रहा है, जबकि आइआइटी मद्रास, कानपुर, हैदराबाद, खड़गपुर और आइआइआइटी दिल्ली जैसी शीर्ष संस्थाएं इसके तकनीकी सहयोगी हैं।

कैसा होगा भारतजेन का एआइ?

भारतजेन के मॉडल बोलचाल, पढ़ने-लिखने, ऑडियो, डॉक्यूमेंट विजन और मल्टीलिंगुअल समझ, सभी क्षेत्रों में काम करेंगे। यह सिस्टम भारतीय नागरिक जिस तरह बात करते हैं, पढ़ते हैं या डिजिटल दुनिया में इंटरैक्ट करते हैं, उसी शैली को पहचानने और समझने में सक्षम होंगे। यह भारत की 22 से अधिक भाषाओं के डेटा पर प्रशिक्षित होगा।